सर्वोत्तम जल उपयोग की क्षमता के लिए ड्रिप सिंचाई

ड्रिप सिंचाई

ड्रिप (टपक) सिंचाई प्रणाली एक नवीन पद्धति है, जिसके द्वारा कृषक अपने बागों की बड़ी आसानी से सिंचाई कर सकते हैं। इस पद्धति द्वारा पौधों को उनकी आवश्यकता अनुसार पानी को बूँद-बूँद के रूप में पौधों की जड़ क्षेत्र में उपलब्ध कराया जाता है।

ड्रिप प्रणाली के माध्यम से पौधों में पोषक तत्वों को पहुचाँने की प्रक्रिया को फर्टिगेशन कहते हैं।

ड्रिप सिंचाई के लाभ

- सिंचाई की परंपरागत विधि की तुलना में 30 से 70 प्रतिशत पानी की बचत होती है।
- 30 से 100 प्रतिशत उत्पादन में वृद्धि।
- उर्वरक की मात्रा में कमी आती है जिससे कुल लागत में बचत होती है।
- कीट नियंत्रण प्रबन्धन में सुधार होता है।
- तरंगित (उबड़-खाबड़) भूमि में भी खेती संभव।
- भारी तथा हल्की मृदा में प्रभावकारी जल प्रबंधन।
- खरपतवार की वृद्धि को नियंत्रित करता है जिससे श्रम लागत में बचत होती है।
- सिंचाई करते समय कृषक अपना कोई भी कार्य कर सकता है, अतः समय की बचत होती है।

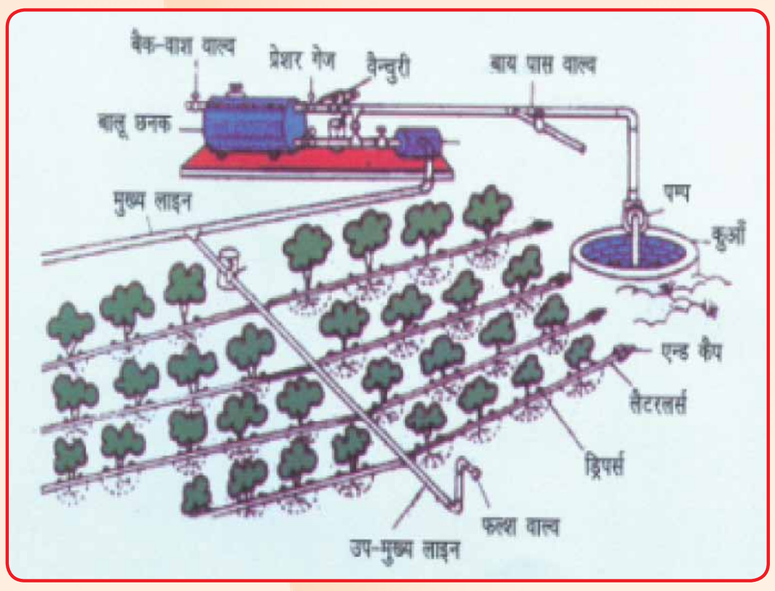

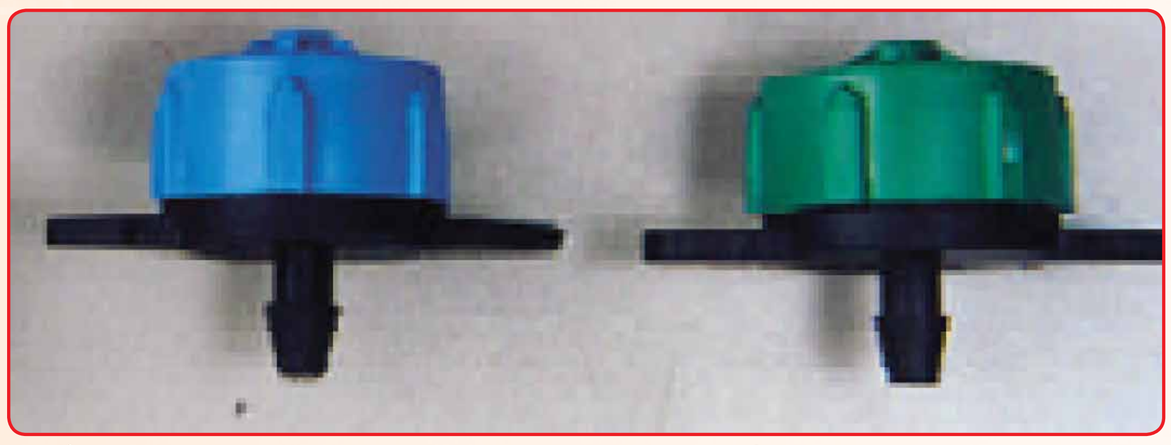
लैट्रल पाइप के उपर लगने वाले ड्रिपर्स (ऑन लाइन ड्रिप)

लैट्रल पाइप के अन्दर लगने वाले ड्रिपर्स (इन लाइन ड्रिप)

उप-सतही ड्रिप प्रणाली

सतही ड्रिप प्रणाली

फसलें	पैदावार में वृद्धि (प्रतिशत)	जल की बचत (प्रतिशत)
टमाटर	25.50	40.60
गन्ना	50.60	30.50
भिण्डी	25.40	20.30
आलू	20.30	40.50
बन्दगोभी	30.40	50.60
बैंगन	20.30	40.60
मिर्च	10.40	60.70
लौकी	20.40	40.50
फूलगोभी	60.80	30.40

DEPARTMENT OF HORTICULTURE & FOOD PROCESSING, CIRCUIT HOUSE, Dehradun (Uttarakhand) INDIA
Horticulture Mission for North East & Himalayan States, Uttarakhand ❙ E-mail: missionhortiuk@gmail.com ❙ Ph: 0135-2754961
For further details contact: Dr. Surbhi Pandey, Coordinator (HMNH) ❙ E-mail: surbi_pandey@yahoo.com

Printed at SHIVA OFFSET PRESS, Dehradun Ph. 0135-2715748